विचार बिन्दु

भोली भाली सूरत वाले होते हैं जल्लाद भी। –उर्दू कहावत

प्रतिष्ठित डॉक्टरों की सलाह-लेकिन कुछ जिम्मेदारी, कुछ दिक्कतें डॉक्टरों और मरीजों की भी

पिछले कुछ दिनों दो प्रतिष्ठित हिंदी दैनिक अखबारों में दो प्रतिष्टित चिकित्सको के लेख पढें, जिन से मुझे वर्तमानं परिस्थितियों में डाक्टर, बीमार, जांच और इलाज पर आम लोगों की कुछ प्रतिक्रियाएं आप तक पहुंचाने का साहस हुआ। मैं जिन लेखों की बात कर रहा हूँ उनका शीर्षक है--''बुखार: एक प्रकृति प्रदत्त सुरक्षाचक्र ! है'' तथा ''बेअसर होती दवाएं एक नया संकट खड़ा कर सकती है''।

इन लेखों में एनटीबियोटिक दवायों के न्यूनतम उपयोग की सलाह दी है और इनके ज्यादा उपयोग से होने वाले नुकशान की ओर ध्यान आकृष्ठ किया है। एक लेख की जिस बात पर मुझे यह पंक्तियां लिखने के लिए प्रेरित किया वे है---''---**बुखार उताराने की दवा लिवर को थोड़ा बहुत नुकसान हर हालत में पहुंचती है। इसलिए जहां तक सम्भव हो उनका न्यूनतम उपयोग कीजिये। आपका चिकित्सक यदि एंटीबायोटिक का सुझाव देता है तो उसका औचित्य पूछिये। याद रखिये कि जब आप चिकित्सक को परामर्श शुल्क देते है तो फिर परामर्श लेने से हिचकिचाते क्यो हैं?--शरीर प्रकृति द्वारा निर्मित है तो प्रकृति के अनुसार ही जीना है-----बुखार नहीं बुखार के कारण का उपचार करना है--।**

दूसरे लेख की मुख्य बात यह है कि एंटीबायोटिक दवाओं के ज्यादा, अनावश्यक उपयोग से रोग विषाणुओं में उनसे अपने बचाव के लिए स्वयं में कुछ परिवर्तन कर लेते है और दवा उन पर बेअसर हो जाती है। दूसरी, तीसरी व इस से भी आगे की नई नई दवाई आएंगी और रोग विषाणु भी वैसे ही बचाव के तरीके ढूंढेगे और दवाएं बेअसर होती जाएगी।

सर्व प्रथम तो यह **डॉक्टर का दायित्व है कि जरूरी से अधिक एंटीबायोटिक या अन्य दवाइयां-जांचे लिखे ही क्यों?** किन्तु केवल इतना कह देने से समस्या का निदान नहीं होता। बहुत सी बार मरीज स्वयं पुरानी नुस्खा पर्ची पर दवाई लेता रहता है । अधिकांशत: केमिस्ट भी पर्ची चालू है या पुरानी इस बात को नजरअंदाज करते हैं। सरकारी आदेश से यह सुनिश्चित किया जाना अत्यंत कठिन है कि केमिस्ट चालू नुस्खे पर ही दवा दें, यद्यपि नैतिक दृष्टि से यह उनका दायित्व है।

डाक्टर समुदाय की आलोचना नहीं किन्तु कई बार सुनने में आता है कि कुछ लोग अनावश्यक अधिक दवाई-जांचे लिखते हैं। एक ही व्याधि के लिए आवश्यकता से अधिक व एक साथ कई दवाइयां इसलिए लिखते हैं ताकि मरीज जल्दी ठीक हो जाए। इस से डॉक्टर का फौरी प्रचार-प्रसार हो जाता है। ज्यादा मरीज उनसे इलाज कराने को आकर्षित होते हैं। इस प्रकार की प्रवर्ती ग्रामीण इलाकों, छोटे शहरों में कार्यरत परामर्श देने वालों में व गरीब व निम्न मध्यम वर्गीय परिवारों के बीमार व्यक्तियों में ज्यादा देखी जाती।

गरीब, अल्पाय व दैनिक आमदनी भोगियों की अपनी समस्या है। उनके लिए बार बार डॉक्टर के पास जाना, बीमार होना धन उपलब्धता व रोजी रोटी की बहुत बड़ी समस्या उतपन्न कर देता है।वे चाहते है तुरन्त स्वास्थ्य लाभ और रोजगारी कर घर चलाएं। इसलिए अपनी सुविधा या मजबूरी के चलते पुराने नुस्खों पर दवाई लेते रहते हैं।

डॉक्टरों की नैतिकता, प्रतिबद्धता की भी कई अत्यंत उम्मदा/उत्कृष्ट कहानियां भी जन सामान्य से सुनने को मिलती है। यहां बिना नाम लिखे में कुछ डॉक्टर्स की नैतिकता व पेशे के स्टैंडर्ड्स के प्रति उनकी प्रतिबद्धता के बारे में लिखना चाहता हूं।

सर्व प्रथम तो यह डॉक्टर का दायित्व है कि जरूरी से अधिक एंटीबायोटिक या अन्य दवाइयां-जांचे लिखे ही क्यों? किन्तु केवल इतना कह देने से समस्या का निदान नहीं होता। बहुत सी बार मरीज स्वयं पुरानी नुस्खा पर्ची पर दवाई लेता रहता है । अधिकांशतः केमिस्ट भी पर्ची चालू है या पुरानी इस बात को नजरअंदाज करते हैं। सरकारी आदेश से यह सुनिश्चित किया जाना अत्यंत कठिन है कि केमिस्ट चालू नुस्खे पर ही दवा दें,यद्यपि नैतिक दृष्टि से यह उनका दायित्व है।

एसएमएस अस्पताल के पूर्व अधीक्षक, अत्यंत सम्माननित व वरिष्ठ डॉक्टर रिटायरमेंट के बाद दुर्लभजी अस्पताल में सेवाएं दे रहे थे। एक महिला मरीज उनके पास नुस्खों के पर्चे व दवाओं का ढेर लेकर आई। कहने लगी न जाने कितने डॉक्टरों को दिखा लिया और कितनी दवाई खा ली किन्तु पेट की तकलीफ ठीक ही नहीं हो रही। डॉक्टर नें बड़े ध्यान से धैर्यपूर्वक उसे सुना और जो कहा वह हूबहू लिख रहा हूँ--ठीक है माता जी,यह दवाइयां बंद करदो और यह एक दवाई 5-7 दिन लेना और फिर भी कभी ऐसा ही हो तो खाने के आधा पौण घण्टे पहले ले लिया करो,आराम आजाएगा। शायद,उस समय 5 रुपए की दवा नें उसे राहत दे दी। **ओर भी बहुत से ऐसे डाक्टर होंगे किन्तु शायद वे डॉक्टर्स की कुल संख्या की तुलना में कम ही होंगे।**

बहुत पहले, करीब 40 साल पहले कोटा में एक बच्चों के डॉक्टर थे। उनका उसूल था कि अस्पताल समय खत्म होने पर चाहे 100 आदमी लाइन में हों, जब तक लास्ट मरीज को नहीं देख लेते थे, सीट नही छोड़ते थे। दो जगह घर पर देखते थे, शायद 5 रुपये फीस, उसमें भी कोई अत्यंत गरीब-मजदूर नहीं दे सके तो नहीं लेते थे और सेम्पल की दवाइयां ऐसे लोगों को देते थे।

जयपुर के एक डॉक्टर नें एक मरीज को कुछ जांच करने के लिए पर्ची लिखी। मरीज पास के जांच सेंटर में जांच कराने पहुंचा। उस से पहले व्यक्ति से, जांच केंद्र वाले नें एक राशि वसूल की और इस व्यक्ति से उससे काफी कम राशि ली। उस व्यक्ति नें पूछ लिया, भाई इतना अंतर क्यों? उसका जवाब था, **आप जिस डॉक्टर को दिखा कर आये हो वे हमारे से कमीशन नहीं लेते,सो उतना कम कर देते है।** सम्बंधित डॉक्टर भी एसएमएस अस्पताल के अधीक्षक पद से रिटायर हुए हैं।

जेनेरिक दवाइयों को लेकर भी कई भ्रांतियां, समस्याएं हैं। सबसे बड़ी समस्या तो यह है कि इनके नाम बहुत बड़े व आसानी से मरीज और शायद, डॉक्टर भी, याद रख सके ऐसे नहीं।

उदाहरण के लिए पेट में एसिडिटी एक सामान्य समस्या है और कई संक्षिप्त नाम यथा टोप्सिड आदि लेने का परामर्श डॉक्टर देते हैं। इसका जेनेरिक नाम है--Pantoprazole gastro resistant and Compartidone prolonged release capsules. आदि। इसी प्रकार के नाम अन्य छोटी छोटी शारीरिक व्याधियों की दवाइयों के है। जेनेरिक दवाइयों के बड़े नाम होंने के कारण निजी क्षेत्र में काम करने वाले अधिकांश डॉक्टर्स ब्रांडेड नाम से ही दवाइयां लिखते है। अपने घरों पर परामर्श देने वाले सरकारी डॉक्टर्स भी यही करते हैं।

इसके लिए सरकार के स्तर से रक्तचाप, कोलेस्ट्रॉल, बुखार, जुकाम, विभिन्न प्रकार के वाइरल बुखार, एंजाइना व हृदय सम्बन्धी अन्य बीमारियों की व अन्य इसी प्रकार की सामान्य बीमारियों के लिए छोटे व आसानी से याद रहने वाले नाम दिए जाएं। ऐसा सॉफ्टवेयर/तालिका तैयार हो जिस से जनऔषधि स्टोर्स, सरकारी औषधि वितरण केंद्र से जो औषधि जेनेरिक नाम से बेची-इश्यू की जाए, उसके बिल में साथ यह संक्षिप्त नाम ऑटोमेटिक अंकित हो जाए। इस से मरीज आसानी से ध्यान रख सकेगा कि कोन सी दवाई किस बीमारी के लिए है।

जेनेरिक दवाइयों की गुणवत्ता (क्वालिटी) पर आम जन का विश्वास भ्रांतियों के कारण अथवा कुछ कुछ सही कारणों से, अभी तक जमा नहीं। एक सरकारी डॉक्टर साहब से लेखक नें पुछ लिया की जेनेरिक दवाओं की गुणवत्ता के सम्बंध में उनका क्या विचार है? उन्होंने काउंटर प्रश्न कर लिया कि मेरी इस सम्बंध में क्या राय है? मेरे पास एक मरीज का बताया अनुभव था, वैसा उन्हें बता दिया कि उसने उच्च रक्तचाप नियंत्रण के लिए जनऔषधि स्टोर से जेनेरिक दवाई ली किन्तु उसे वापस सम्बंधित ब्रांडेड दवा लेनी पड़ी।

डॉक्टर महोदय नें बड़ी सधी प्रतिक्रिया दी कि-----

दवाओं की कीमत तो कम होनी ही चाहिए और जेनेरिक दवाइयों के जरिये यह किया जा रहा है। बहुत से मरीज लाभान्वित भी हो रहे हैं । यह भी सही है कि कई लोग गुणवत्ता के सम्बंध में आशंका तो व्यक्त करते हैं। आगे उनका कहना था कि क्वालिटी सुनिश्चित करने के लिए सरकार नें ड्रग विभाग के अधिकारियों के लिए निरीक्षण,बनती दवाओं की क्वालिटी जांच व बाजार में आई दवाओं के औचक नमूने लेना व गुणवत्ता जांचना आदि कई प्रावधान कर रखे है किन्तु अंततोगत्वा यह सब करने वालों में से कुछ लोग, विभिन्न प्रलोभनों या कर्तव्यहीनता के चलते कहीं न कहीं शिथिलता बरतते होंगे और खराब क्वालिटी औषधियां बाजार में आ जाती हैं।

अंत में फीस देकर परामर्श के लेना व मरीज अधिकारपूर्वक सारी जानकर लेने की राय पर----- राय सोलह आने सही किन्तु हर मरीज डॉक्टर से लगातार तो पुछ नहीं सकता और अधिकांशत: एक जवाब होता है--**बाहर सिस्टर या कम्पाउंडर या केमिस्ट सब समझा देंगे।** क्या हम यह आशा कर सकते हैं कि एक गरीब, अल्पशिक्षित, अल्पाय वाला व्यक्ति डॉक्टर जिसके क्लिनिक पर बाहर 100-50 मरीजों की लाइन लगी हो, वह बार-बार अपनी शंका समाधान की बात पूछने का साहस करेगा? यह काम तो स्वयं डॉक्टर का दायित्वबोध ही करेगा कि वह बोल कर या लिख कर दवाइयों-जांचों की आवश्यकता को विस्तार से मरीज को समझाये।

–महावीर सिंह,
पूर्व आईएएस

जोहड़ व खाई खुदाई का कार्य अधूरा, ठेकेदार ने 43 लाख का भुगतान उठाया

10 माह पहले दिया था सफाई व खुदाई के लिए 55 लाख का टेंडर

किशनगढ बास, (निसं)। शहर में बरसात व गंदे पानी की निकासी को लेकर नगर पालिका ने वर्षों पुरानी किले के चारों ओर निर्मित सरकारी खाई व जोहड़ की खुदाई तथा सफाई के लिए 2023 में करीब 10 माह पहले प्लान तैयार कर लगभग 55 लाख रुपए में एक अलवर की फर्म के नाम टेंडर छोड़ा था। बताया जा रहा है कि 80 प्रतिशत कार्य पूर्ण कर ठेकेदार लगभग 43 लाख रुपए के बिल उठा चुका है और करीब 6 माह से खुदाई व सफाई का कार्य रुका हुआ है। ठेकेदार को 80 प्रतिशत भुगतान किया जाना लोगों में चर्चा का विषय है।

43 लाख रुपए जोहड़ व खाई खुदाई पर खर्च किए जाने के बाद भी नहीं लगता कि बरसात का व शहर के नाले नालियों का पानी पहुंच पाएगा। सवाल यह उठता है कि जब सफाई व खुदाई का कार्य अभी पूरा ही नहीं हुआ तो फिर नगर पालिका ने ठेकेदार के करीब 43 लाख के बिलों का पेमेंट कैसे कर दिया जो एक जांच का विषय है। जानकारी के अनुसार किले के चारों ओर जल भराव के लिए बनी खाई व जोहड़ की सरकारी भूमि पर पक्के स्थाई व अस्थाई रूप से लोगों ने कब्जा किया हुआ है। लेकिन नगर पालिका ने एक भी अतिक्रमण को चिन्हित नहीं किया और नहीं कोई कार्रवाई की। अतिक्रमण को हटाया जाना तो दूर नगर पालिका ने सरकारी जोहड़ व खाई की पैमाइश तक नहीं कराई है। जबकि लोगों की माने तो नगर पालिका बनने से पहले ग्राम पंचायत ने जोहड़ व खाई में लोगों को पट्टे बनाकर दिए हुए हैं। कई कई स्थान पर लंबी चौडी खाई गली का रूप ले चुकी है तो वहीं लंबा चौडा जोहड़ नाले का रुप ले चुके हैं।

किशनगढ़ बास में गंदगी से लबालब भरा जोहड़।

■ करीब छह माह से खुदाई व सफाई का कार्य रुका हुआ है

शहर के लोगों का कहना है कि मानसून आने से पहले पालिका की ओर से बारिश व गंदे पानी निकासी के लिए उचित प्रबंध कर पानी निकासी के रास्तों पर से अतिक्रमण को नहीं हटाया गया तो किशनगढ़ बास में बाढ़ जैसे हालात फिर से पैदा हो सकते हैं। जिसके लिए जिम्मेदार नगर पालिका और उपखंड प्रशासन एवं जनप्रतिनिधि होंगे। पूर्व में भी अनेक बार मानसून के आने पर बाजारों में बारिश का पानी भरने से व्यापारियों का बड़ा नुकसान हुआ है। ईओ जगदीश खीचड़ का कहना है कि मुझे चार्ज लिए कुछ दिन हुए है। फाइल देखकर ही बताया जा सकता है बाहर होने के कारण आज कुछ नहीं बता पाऊंगा। सोमवार को मालूम कर लेवें। वैसे सफाई व खुदाई का मामला कल ही मेरे सामने आया है।

उदयपुर में दुर्लभ सांप मिला

उदयपुर में रेस्क्यू सेंटर के चमन सिंह चौहान ने दुर्लभ सांप को पकड़ा।

उदयपुर, (कासं)। प्रतापनगर के पास रेबारियों का गुडा में सांप होने की सूचना वाइल्ड एनिमल रेस्क्यू सेंटर के संभागीय अध्यक्ष चमन सिंह चौहान को प्राप्त हुई तो लक्ष्मीलाल व निर्मल गमेती मौके पर पहुंचे एक छोटा सांप घर के बाहर पत्थरों में बैठा था।

केंद्र अध्यक्ष चमन सिंह चौहान ने बताया कि यूरेशियन ब्लैक हेडेड काले मुंह का सांप कहलाता है इस सांप की लंबाई 1 फिट होती है यह सांप मुख्यत: लोगों के घरों के आसपास मिल जाता है लंबाई छोटी होने के कारण कोई ध्यान नहीं देता यह सांप रेस्क्यू में बहुत कम मिलता छोटा होने के कारण अक्सर लोग इसको मार देते हैं। सांप का भूरे रंग का होता है जिसका मुंह काला कलर होता है। बहुत ही खूबसूरत सांप है। यह सांप बिना जहर का होता है। इस सांप को काटना नहीं आता। यह सांप घरों के आसपास कीट पतंगे छोटे कीड़ों को अपना आहार बनता है। पर्यावरण संतुलन के लिए यह सांप बहुत जरूरी है संस्था ने इससे पहले भी कहीं दुर्लभ सांपों को रेस्क्यू किया है।

■ '' यूरेशियन ब्लैक हेडेड '' काले मुंह का सांप कहलाता है इस सांप की लंबाई एक फीट होती है

■ सांप का भूरे रंग का होता है जिसका मुंह काला कलर का होता है, यह बिना जहर का होता है

आयुष महिला चिकित्सक 86 दिन के अवकाश पर, कंपाउंडर का भी तबादला

सांभर के आयुष हैल्थ एंड वेलफेयर सेंटर पर लटका ताला

सांभरझील, (निसं)। राजकीय यूनानी औषधालय में विभाग के अधिकारियों की मेहरबानी के चलते यहां पर पदस्थापित एकमात्र महिला चिकित्सक की 86 दिन का सीसीएल अवकाश स्वीकृत कर औषधालय को रामभरोसे छोड़ दिया है। वहीं दूसरी और औषधालय में कार्यरत कंपाउंडर भगवान सहाय महर्षि का उनकी स्वेच्छा के आधार पर श्रीमाधोपुर स्थानांतरण कर दिए जाने के बाद अब आयुष हैल्थ एंड वेलफेयर सेंटर पर ताला लटका हुआ है।

विभाग के डायरेक्टर के मौखिक आदेश पर कंपाउंडर को बाकायदा राजकीय यूनानी औषधालय मरवा (दूदू) के चिकित्सक हनीस खान ने यहां आकर उन्हें नियमानुसार रिलीव कर दिया लेकिन डायरेक्टर ने इस औषधालय के नियमित संचालन के लिए किसी अन्यत्र कंपाउंडर व चिकित्सक को नियुक्त करने के कोई आदेश जारी नहीं करने से यह औषधालय बंद पड़ा है।

खास बात यह भी है कि जिन अधिकारियों ने चिकित्सक की इतनी लंबी अवधि का अवकाश स्वीकृत किया है उसकी शायद जानकारी विभाग के उच्च अधिकारियों को भी नहीं दी गई है और न ही उसकी छुट्टियां निरस्त की जा रही है। जब इस बात की जानकारी अतिरिक्त निदेशक महमूद हसन व सहायक निदेशक हनुमान सहाय को दी गई तो वह भी असमंजस में पड़ गए कि क्या व्यवस्था की जाए।

उनका यह भी कहना था कि ट्रांसफर की प्रक्रिया सरकार के अधीन है इसलिए वे कुछ नहीं कर सकते लेकिन नजदीकी किसी स्टेशन से सप्ताह में तीन दिन किसी चिकित्सक को डेपुटेशन पर लगाने के आदेश शीघ्र जारी करेंगे, फिलहाल इस औषधालय पर निर्भर मरीज अपने इलाज व स्वास्थ्य चेकअप के लिए इधर-उधर भटकने को मजबूर हैं।

■ अतिरिक्त निदेशक व सहायक निदेशक को जानकारी दी गई तो वह भी असमंजस में पड़ गए

सांभर का आयुष हेल्थ एंड वेलफेयर सेंटर चिकित्सक के नहीं होने से बंद पड़ा है।

फ्रांस के सैलानियों ने देखा सोनार किला

जैसलमेर, (नि.सं.)। विश्व विख्यात सोनार दुर्ग को शुक्रवार को फ्रांस के सेलानियों के समूह ने निहारा। सैलानियों ने बताया कि दुर्ग के राजसी महल के अग्र भाग में पीत पाषाण पर की गई बारीक चित्रकारी हमने जीवन में पहली बार देखी है।

सैलानी दुर्ग में स्थित जैन मंदिर के बाहरी भाग में पीले पत्थर पर की गई बारीक कारीगरी को देखकर अभिभूत हुए। ज्ञात रहे कि फ्रांस के पर्यटकों की पहली पसंद जैसलमेर है। फ्रांस के राष्ट्रपति इमैनुएल मैक्रों गणतंत्र दिवस पर भारत के मुख्य अतिथि रहे। फ्रांस आर्मी के सेनाध्यक्ष जनरल पियरे शिल भी गुरुवार को जैसलमेर फील्ड फायरिंग रेंज आये। फ्रांस के सेलानियों ने बताया कि हमारे मन को जैसलमेर में शकून मिलता है। यही कारण है जिससे हमारे देश के ज्यादा से ज्यादा पर्यटक जैसलमेर भ्रमन पर आ रहे हैं।

सैलानियों के समूह को जैसलमेर लेकर आये गाइड धर्मेन्द्रसिंह नरुका ने बताया कि फ्रांस के सेलानियों की पहली पसंद जैसलमेर है।

मीलों तक फैली सुनहरी रेत पर गोल्डन सिटी के सम में सेलानियों ने केमल सफारी का लुत्फ़ उठाया। सोने जैसी रेत वाला रेगिस्तान, शानदार किला , पटुवा हवेलियां और राजसी ठाठ- बाट की झलक देखी। फ्रांस के सैलानियों बताया कि हम जैसलमेर दुबारा भी आएंगे।

विश्व विख्यात सोनार दुर्ग को फ्रांस के सैलानियों के समूह ने निहारा।

■ दुर्ग में स्थित जैन मंदिर के बाहरी भाग में पीले पत्थर पर की गई बारीक कारीगरी को देखकर अभिभूत हुए सैलानी

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

शनिवार 2 मार्च, 2024

फाल्गुन मास, कृष्ण पक्ष, षष्ठि तिथि, शनिवार, विक्रम संवत 2080, विशाखा नक्षत्र प्रात: 7:54 तक, व्याघात योग सांय 6:06 तक, वणिज करण प्रात: 7:24 तक, चन्द्रमा आज प्रात: 8:17 से वृश्चिक राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-कुम्भ, चन्द्रमा-तुला, मंगल-मकर, बुध-कुम्भ, गुरू-मेष, शुक्र-मकर, शनि-कुम्भ, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

रवियोग दिन 2:42 तक है। त्रिपुष्कर योग प्रात: 7:54 से दिन 2:42 तक रहेगा। भद्रा प्रात: 7:24 से रात्रि 8:20 तक रहेगी। आज षष्ठी तिथि में वृद्धि होगी।

श्रेष्ठ चौघड़िया: शुभ 8:20 से 9:46 तक, चर 12:39 से 2:05 तक, लाभ-अमृत 2:05 से 4:58 तक।

राहूकाल: 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 6:58, सूर्यास्त 6:25

मेष
अपनी कार्य योजना को सीमित रखें। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। स्वास्थ्य संबंधित मामलों में लापरवाही ठीक नहीं रहेगी। नवीन कार्यों को टालना ठीक रहेगा।

वृष
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी यथावत बनी रहेगी। आर्थिक मामलों में संतुलन बना रहेगा।

मिथुन
व्यावसायिक आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। व्यावसायिक विवादों से राहत मिल सकती है। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे।

कर्क
परिजनों के व्यवहार के कारण मन खिन्न हो सकता है। आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में दुविधा बनी रहेगी। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी।

सिंह
घर-परिवार के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। अतिथियों का आगमन बना रहेगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

कन्या
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। व्यावसायिक विवादों से राहत मिलेगी।

तुला
आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। चलते कार्यों में प्रगति होगी। घर-परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

वृश्चिक
व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। चलते कार्य बनने लगेंगे। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। मानसिक तनाव से राहत मिलेगी। परिवार में शुभ कार्य बनने लगेंगे।

धनु
अनर्गल कार्यों में समय खराब होगा। अनावश्यक धन खर्च होगा। पारिवारिक कार्यों के कारण भागदौड़ रहेगी। मन में असंतोष बना रहेगा। स्वास्थ्य का ध्यान रखें।

मकर
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक स्थिति ठीक रहेगी। महत्वपूर्ण कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

कुंभ
व्यावसायिक कार्यों में आ रही अड़चनें दूर होने लगेंगी। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा। नौकरीपेशा व्यक्तियों को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी मिल सकती है।

मीन
नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे। अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।